शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' के उपन्यास 'खून का टीका' में चित्रित राजस्थानी लोकजीवन

नारायण सिंह (शोधार्थी)
कुवेंपू विश्वविद्यालय
शिमोगा, कर्नाटक, भारत

शोध संक्षेप

भारत गाँवों का देश है। इसकी छवि न केवल हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में दिखाई देती है अपितु हमारा साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। हिंदी उपन्यास की यात्रा में आंचलिकता या ग्राम जीवन की आधारभूमि पर प्रारंभ से ही रचना की जाती रही है। उपन्यासकारों ने भारत की लोक-संस्कृति का जीवंत चित्रण करने का प्रयास किया है। हिंदी उपन्यासकारों ने भारत के भिन्नभिन्न राज्यों के ग्राम-जीवन पर अपने उपन्यास की रचना की है। इसी क्रम में रांगेय राघव, श्रीमती शीला व्यास, यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र', राजेन्द्र मोहन भटनागर, हरिराम मीणा आदि नाम हैं, जिन्होंने राजस्थान के लोकजीवन को अपने उपन्यास का आधार बनाकर उपन्यास की रचना की। 'खून का टीका' श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' द्वारा रचित प्रमुख उपन्यास है। इस उपन्यास की आधारभूमि राजस्थान के लोकजीवन में रची बसी। मेवाड़ क्षेत्र में राणा हमीर के राजतिलक के घटनाक्रम को कथासूत्र में पिरोकर प्रस्तुत किया गया है। सांमत अपने राज्य की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर करने से पीछे नहीं हटते हैं। राणा हमीर को 'खून का टीका लगाकर मेवाड़ का राणा घोषित कर देते हैं। अपनी मातृभूमि के लिए प्राणोत्सर्ग की अद्भुत कथा है।

बीज शब्द : *लोकजीवन, लोक-संस्कृति, राजस्थानी, उपन्यास, सामंती व्यवस्था*

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में खड़ीबोली के विकास ने भी हिंदी साहित्य की अनेकों नवीन विधाओं को जन्म देने का कार्य किया। किंतु आधुनिक हिंदी साहित्य की सबसे प्रभावोत्पादक एवं समाज के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करने वाली विधाओं में उपन्यास का नाम प्रथम स्थान पर रखा जाता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में आरंभ में जन्म लेकर वर्तमान तक उपन्यास ने विकास की लंबी यात्रा तय की है। अनुवाद से लेकर मौलिकता तक, समाज से लेकर व्यक्ति तक, धर्म से लेकर ज्ञान तक, काल्पनिकता से लेकर यथार्थपरकता तक हिंदी उपन्यास ने विकास के नए चरण स्थापित किए हैं। भारतेंदु युग से जन्म लेकर प्रेमचंद काल तक और प्रेमचंद से लेकर आधुनिकता के बोध से सरोबार होने तक उपन्यास ने नित्य जीवन के हर भाव हर पक्ष को स्पर्श करने का प्रयास किया है। अपनी जीवन से जुडी अनुभूतियाँ ही उपन्यास को आमजन के हृदय में स्थान दिला पाई हैं। खड़ीबोली के विकास ने जब आधुनिककाल में हिंदी उपन्यास का बीज बोया तो उसके साथ ही राजस्थानी उपन्यासों ने भी अंकुरित होकर अपने अस्तित्व की स्थापना करना आरंभ कर दिया था। कालांतर में हिंदी एवं राजस्थानी उपन्यासों की यात्रा सहगामी होकर ही आगे बढ़ती रही है। दोनों ही ने अपने अभिव्यक्ति का आधार लोक अनुभूतियों को बनाया। व्यापक अर्थ में देखें तो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लोक का अर्थ इस समस्त संसार से लिया जाता है। किंतु 'लोक' शब्द की प्रचलित व्यवस्था में यह उस सांस्कृतिक विरासत का द्योतक है, जो गाँवों की माटी की खुशबू में आज भी रची-बसी है। डॉ आदर्श सक्सेना के अनुसार, "एक ही तत्व ऐसा है जो किसी न किसी रूप में प्रत्येक प्रकार के उपन्यास में अवश्य रहता है। यह तत्व है परिवेश। परिवेश दो प्रकार का होता है-प्राकृतिक एवं मानवीय। इसके अभाव में मनुष्य की कल्पना ही असंभव लगती है। परिवेश का ही अन्य नाम देशकाल व वातावरण है।"**1** जहाँ जीवन आधुनिकता के बोध से परे प्रकृति के नियमों के अधिक निकट बसता है। हिंदी उपन्यासों की आधारभूमि भी इसी लोक जीवन से प्रभावित होकर आगे बढ़ रही है। श्याम परमार के शब्दों में, "लोक साधारण जन-समाज है, जिसमें भू-भाग पर फलित हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित हैं। यह शब्द वर्ग-भेद रहित, व्यापक एवं प्राचीन परंपराओं की श्रेष्ठ राशि सहित अर्वाचीन सभ्यता-संस्कृति के कल्याणमय विकास का द्योतक है। भारतीय समाज में नागरिक एवं ग्रामीण दो भिन्न संस्कृतियों का प्रायः उल्लेख किया जाता है, किंतु 'लोक' दोनों संस्कृतियों में विद्यमान है।"**2** राजस्थानी उपन्यासों में तो निश्चित तौर पर राजस्थान के लोकजीवन का चित्रण हुआ है, किंतु हिंदी उपन्यास भी इससे वंचित नहीं रहा है। राजस्थान लोकजीवन का अथाह सागर है। जिसमें लोक जीवन के प्रत्येक रंग की अनुभूति बसी है। जीवन का हर भाग लोकसंस्कृति से ही आरंभ होता है। ऐसे में राजस्थानी के साथ-साथ हिंदी उपन्यासों का राजस्थानी लोकजीवन से प्रभावित होना सुसंगत ही है। समय के साथ उपन्यासों के स्वरूप ने आधुनिकता अवश्य ग्रहण कर ली किंतु आज भी राजस्थान के लोकजीवन का चित्रण हिंदी एवं राजस्थानी उपन्यासों में व्यापक रूप से उपस्थित है। चाहे वह राजस्थानी भाषा हो या राजस्थानी की मान-मान्यताएँ हों। चाहे वो राजस्थानी कहावतें हों या राजस्थान के लोकनाट्य हो। लोक देवी-देवता हों या गाँव में बसे चूल्हे- चौकों की पवित्रता हो। चाहे खेतों में गूँजते गीत हो या मौताणे की मार्मिकता हो, मिट्टी गारे से लिपे घर हों या मांडणे, सांझियाँ हो। जीवन के हर अवसर, हर अनुभूति की अभिव्यक्ति राजस्थान के लोकजीवन में परिलक्षित अवश्य होती है। लोकजीवन की जो धनिकता राजस्थान में मिलती है, उसी के प्रभाव से हिंदी उपन्यासों में राजस्थान के लोकजीवन की अभिव्यक्ति को इतने व्यापक रूप में चित्रित करने के प्रयास की गौरव गाथा आज भी जारी है।

राजस्थान जीवन के रंगों से सराबोर प्रदेश है। जहां आज भी आधुनिकता, लोकजीवन की अनुगामिनी ही है। इस प्रदेश में हर दिन एक त्योहार है, तो हर अवसर एक गीत है। शहरी क्षेत्रों का विकास गाँव तक पहुँच रहा है फिर भी जीवन में समाहित लोकतत्व, दूध-पानी से एकमेव हो चुके हैं। राजस्थानी लोकजीवन की अनुभूति, आज भी उतनी ही जीवंत है, उत्साह एवं प्रेम से रची बसी है। ऐसे में राजस्थानी पृष्ठभूमि को आधार बनाकर रचे जाने वाले हिंदी उपन्यासों में राजस्थानी लोकजीवन की अभिव्यक्ति का अनिवार्य हो जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

उपन्यास का परिचय

हिंदी भाषा में लिखने वाले राजस्थानी लेखकों में यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' सबसे अग्रणी हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानिया, कविता संग्रह एवं लघु नाटकों की रचना कर साहित्य के क्षेत्र में अपना

महत्वपूर्ण योगदान दिया है। -'खून का टीका' उपन्यास सामंती प्रथा पर आधारित है। इसमें चित्तौड़ की रक्षार्थ सामंतों के बलिदान को आधार बनाकर कथा की रचना की गयी है। यह उपन्यास चितौड़ के राणा हम्मीर के जीवन पर आधारित है। 'खून का टीका' उपन्यास रावल और सिसोदिया वंश को आधार बनाकर लिखा गया है। यह उपन्यास राणा हम्मीर के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है। इसे चंद्रजी ने श्री कर्नल जेम्स टॉड, गौरीशंकर ओझा व कविराजा श्यामलदास को समर्पित किया है।

कथावस्तु

रत्नसिंह के विश्वसनीय योद्धा सामंत लक्ष्मण सिंह 'लाखा' के स्वप्न से शुरूआत होती है। लाखा को स्वप्न आता है कि अलाउद्दीन खिलजी से मेवाड़ की रक्षा करने के लिए कुलदेवी राजबलि मांग रही है। कुलदेवी लाखा को साक्षात कहती है कि मुझे रक्त चाहिए, मुझे बलिदान चाहिए, मुझे राजबलि चाहिए। लाखा के बारह वीर पराक्रमी पुत्र थे। उनमें से ज्येष्ठ पुत्र आरसी थे। लाखा से राणा रत्नसिंह कहते हैं कि ये सब भ्रम भी हो सकता है तब लाखा कहते हैं कि मैं देवी का सच्चा भक्त हूँ। मुझे देवी ने स्वप्न या प्रत्यक्ष में दर्शन दिए हैं तो किसी प्रयोजन केा लेकर ही दिए हैं। अलाउद्दीन खिलजी महारानी पद्मिनी के सौंदर्य पर मोहित होकर अपना सारा रण-कौशल चितौड़ हथियाने में लगा देता है। रत्नसिंह और आरसी अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध के लिए तैयार होते हैं। दोनों में घमासान युद्ध होता है। जिसमें अरिसिंह का देहांत हो जाता है। सभी सरदार और सामंत केसरिया धारण करते हैं और रानी पद्मनी व अन्य वीरांगनाएँ जौहर करती हैं। जिसमें अलाउद्दीन खिलजी को कुछ भी हाथ नहीं लग पाता है। अजयसिंह कैलवाड़ा में निर्वासित जीवन व्यतीत करता है और यहीं पर चितौड़ को स्वतंत्र होने के सपने देखता है। यवनों ने चितौड़ को कुछ दिन अपने पास रखकर जालौर के चौहान मालदेव को सौंप दिया। कैलवाड़ा में मूजा बालेचा राजपूत डाकू अजयसिंह को परेशान करता है। मूजा वालेचा को मारने के लिए अजयसिंह हम्मीर को बुलाते है। हम्मीर अपनी माँ के सानिध्य में सैन्य शिक्षा ग्रहण करता है। हम्मीर माँ और चाचा (अजयसिंह) के चरणस्पर्श करके मूजा वालेचा का सिर लाने के लिए सामेरी चला जाता है और वहाँ पहुँचकर मूजा बालेचा को हराकर उसका सिर धड़ से अलग कर अजयसिंह के चरणों में लाकर रख देता है। अजयसिंह हम्मीर को चितौड़ का राणा घोषित कर देता है। इसके पश्चात् हम्मीर व चितौड़ पर आक्रमण हो जाता है। इस युद्ध में खेतसी मारा जाता है और शेरा अपने वक्ष के घाव से रक्त निकालकर हम्मीर के माथे पर खून का टीका लगा देता है। इस प्रकार 'टीका दौड़' की रस्मपूर्ण होती है।

लोक-संस्कृति

'खून का टीका' उपन्यास में मेवाड़ के शौर्य का वर्णन मिलता है। रानी पद्मनी के शौर्य व वीरता का जौहर दिखाया गया है। क्षत्रिय धर्म के पालन व वचन की आन के लिए प्राणों की आहूति तक दी जाती है। सम्पूर्ण घटनाक्रम में शौर्य व वीरता का समावेश है। इसके साथ ही पारिवारिक क्लब, सत्ता की लालसा हेतु अपने परिवारजनों का अहित तक कर दिया जाता है। कई उदाहरणों में पुत्र द्वारा पिता की हत्याकर या भाई की हत्याकर राजगद्दी को छीनने का दृश्य भी बताया गया। स्वामीभक्ति के सच्चे उदाहरणों का वर्णन भी बखूबी किया गया। अपने कुलदेव के मान को सर्वोपरि रखा गया है। कुलदेव की आज्ञा सर्वोच्च मानी गई है। लेखक ने सामंती जीवन के साथ-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साथ मेवाड़ के ग्राम जीवन का चित्र खींचा है, देखिए-, "खेतों से गीत की मादक ध्वनि आने लगी थी। कृषक कन्याएं अलंकारों को धूप में झलकाती, रंग-बिरंगे वस्त्रों से सुसज्जित एकाग्र होकर गा रही थी।"**3** मेवाड़ की जातीय समरता का एक उदाहरण, "हम्मीर ने कहा, भील, सामंत और मीणा और वीर संगठित होकर सामना करें।"**4**

लोकभाषा-कथा में सामन्ती परिवेश का वर्णन है। अतः सामन्ती भाषा का प्रयोग अधिक है। मुगल व भवनों के साथ हुआ युद्ध के कारण कथा में भवन व मुगल भाषा का भी प्रयोग किया गया है। अरसी का अपने पिता के साथ एक संवाद देखिए, "बप्पा रावल का यह मुकुट मुझे पहना दिया जाए। सिसोदिया कुल के सूय को सौंपा जाए। मुझे मेवाड़ की मान-मर्यादा की रक्षा की जाए। मैं जीते जी पगड़ी को नहीं गिरने दूंगा।"**5**

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' द्वारा रचित 'खून का टीका' राजस्थानी लोकजीवन का एक जीवंत चित्रण है। जिसमें लोकजीवन के भिन्न-भिन्न तत्वों का दर्शन उपन्यासकार द्वारा करवाया गया है। मेवाड़ की धरती पर त्याग और बलिदान की कहानी कहने में लेखक का प्रयास सफल रहा है। मेवाड़ के सामंती जीवन, सामाजिक समरसता और लोक व्यवहार का चित्रण करके उपन्यासकार ने निश्चित रूप से लोकजीवन के तत्वों से हमारे परिचय करवाया । उपन्यास को पढ़कर पाठक निश्चित रूप से राजस्थान के वीरों और उनके जीवन के प्रति सम्मान और गौरव से भर उठता है। उपन्यासकार अपने शब्दों से पाठके के मन में यह भाव भरने में सफल हो जाते हैं कि कर्नल जेम्स टॉड के निम्नलिखित शब्दों को यह उपन्यास सत्य प्रमाणित करता है कि, "राजस्थान में कोई छोटा-सा राज्य ऐसा नहीं है, जिसमें थर्मापोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही ऐसा नगर मिले जहाँ लियोनिडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हआ हो।"**6**

संदर्भ ग्रंथ

1 सक्सेना, डॉ आदर्श, हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि, सूर्य प्रकाशन मंदिर 1981, पृष्ठ 52

2 परमार, श्याम, भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 10

3 शर्मा 'चंद्र', यादवेन्द्र, खून का टीका, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्र सं 1960, पृष्ठ 21

4 शर्मा 'चंद्र', यादवेन्द्र, खून का टीका, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्र सं 1960, पृष्ठ 188

5 शर्मा 'चंद्र', यादवेन्द्र, खून का टीका, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्र सं 1960, पृष्ठ 15

6 टॉड, कर्नल जेम्स, एनाल्स एंड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान, खंड 2, 1829